भारत सरकार

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या: 882

दिनांक 26 जुलाई, 2024 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

सर्वाइकल कैंसर की जांच

882. **श्री प्रवीण पटेल:**
डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे:
श्री नरेश गणपत म्हस्के:

क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार यह स्वीकार करती है कि देश में सर्वाइकल कैंसर की कम जांच की जाती है क्योंकि देश में 30-49 वर्ष की आयु की केवल 1.9 प्रतिशत महिलाओं की ही जांच की जाती है;

(ख) सार्वभौमिक प्रतिरक्षण कार्यक्रम में एचपीवी टीके को शामिल करने में विलंब के क्या कारण हैं;

(ग) सरकार द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में कैंसर की जांच के लिए प्रशिक्षित कार्मिकों की कमी और अपर्याप्त अवसंरचना को दूर करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं;

(घ) सर्वाइकल कैंसर की जांच के लिए वीआईए के स्थान पर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संस्तुत एचपीवी डीएनए जांच कराने की योजनाओं का ब्यौरा क्या है; और

(ङ) ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाइकल कैंसर की जांच से जुड़े सामाजिक प्रतिष्ठा पर धब्बा कम करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा क्या सुधारात्मक उपाय किए गए हैं?

उत्तर

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (ग): सामान्य केंसरों (अर्थात् मुख, स्तन और गर्भाशय ग्रीवा) सहित सामान्य एनसीडी की स्क्रीनिंग आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के तहत सेवा प्रदायिगी का अभिन्न अंग है। दिनांक 9 जुलाई 2024 की स्थिति के अनुसार भारत भर में 173546 आयुष्मान आरोग्य मंदिर प्रचालित हैं। राष्ट्रीय एनसीडी पोर्टल के अनुसार 4.71 करोड़ महिलाओं की गर्भाशय ग्रीवा के लिए स्क्रीनिंग की गई है।

टीकाकरण संबंधी राष्ट्रीय तकनीकी सलाहकार समूह (एनटीएजीआई) ने जून, 2022 में 9 से 14 वर्ष की किशोरियों के लिए सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम में एचपीवी वैक्सीन की शुरूआत की अनुशंसा की थी। अंतरिम केंद्रीय बजट 2024-2025 में गर्भाशय ग्रीवा कैंसर की रोकथाम के लिए 9 से 14 वर्ष की आयु वर्ग की लड़कियों के लिए टीकाकरण को प्रोत्साहित करने उल्लेख किया गया है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के भाग के रूप में, राष्ट्रीय गैर-संचारी रोग निवारण और नियंत्रण कार्यक्रम (एनपी-एनसीडी) के अंतर्गत राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जो राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर और संसाधन की उपलब्धता के अधीन होती है। यह कार्यक्रम कैंसर की रोकथाम, शीघ्र निदान, प्रबंधन और कैंसर सहित गैर-संचारी रोगों (एनसीडी) के उपचार के लिए उचित स्तर के स्वास्थ्य सेवा सुविधा केंद्र के लिए रेफरल के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, मानव संसाधन विकास, स्वास्थ्य संवर्धन और जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित है।

देश में एनएचएम के तहत और व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या के भाग के रूप में तीन सामान्य कैंसर (मुंह कैंसर, स्तन कैंसर और गर्भाशय ग्रीवा कैंसर) सहित सामान्य एनसीडी यानी मधुमेह, उच्च रक्तचाप निवारण रोकथाम, नियंत्रण और जांच के लिए जनसंख्या-आधारित पहल शुरू की गई है। इस पहल के तहत, 30 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों को तीन सामान्य कैंसर की जांच के लिए लक्षित किया जाता है। इन सामान्य कैंसर की जांच आयुष्मान आरोग्य मंदिर में सेवा प्रदान करने का एक अभिन्न अंग है। प्रशिक्षित फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं [मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता (आशाकर्मी) और ऑकसलरी नर्स और मिडवाइफ (एएनएम)] के माध्यम से रोकथाम, नियंत्रण और जांच सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग ने सूचित किया है कि वर्ष 2019 से राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईसीपीआर) कैंसर स्क्रीनिंग में प्रशिक्षण के लिए नामित नोडल केंद्र है और कोल्पोस्कोपी [इंडियन सोसाइटी ऑफ कोल्पोस्कोपी एंड सर्वाइकल पैथोलॉजी (आईएससीसीपी)] में प्रशिक्षण के लिए नोडल प्रशिक्षण केंद्र है और इसने कैंसर स्क्रीनिंग में स्त्री रोग विशेषज्ञों, चिकित्सा अधिकारियों, दंत चिकित्सकों, नर्सों और आशाकर्मी सहित 2000 से अधिक स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को प्रशिक्षित किया है और राज्य सरकारों के साथ लगातार सहयोग कर रहा है।

(घ): वर्तमान में गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर की जांच के लिए एसिटिक एसिड (वीआईए) के साथ दृश्य निरीक्षण से एचपीवी डीएनए परीक्षण को बदलने के संबंध में सरकार विचार नहीं कर रही है।

(ङ): आयुष्मान आरोग्य मंदिर योजना के माध्यम से व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या के तहत निवारक पहलू को आरोग्य कार्यकलापों को बढ़ावा देकर और सामुदायिक स्तर पर लक्षित संप्रेषण सुदृढ़ किया जाता है। कैंसर के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने और स्वस्थ जीवन-शैली को बढ़ावा देने के लिए अन्य पहलों में राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस (7 नवंबर) और विश्व कैंसर दिवस (4 फरवरी) का आयोजन करना और निरंतर सामुदायिक जागरूकता के लिए प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया का उपयोग करना शामिल है। इसके अलावा, एनपी-एनसीडी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा उनके कार्यक्रम कार्यान्वयन योजनाओं (पीआईपी) के अनुसार कैंसर के लिए जागरूकता निर्माण (आईईसी) कार्यकलापों के लिए एनएचएम के तहत वित्तीय सहायता देता है।

*****